84

जनवरी-जून, 2023

आज़ादी का अमृत महोत्सव

# मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

# मध्य भारती

## मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066

UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.no.-15

(अंक-84, जनवरी-जून, 2023)

**संरक्षक**

प्रो. नीलिमा गुप्ता

कुलपति

**प्रधान सम्पादक**

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

**सम्पादक**

प्रो. भवतोष इन्द्रगुरू

प्रो. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव

डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

**डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय**

सागर (मध्यप्रदेश) - 470003

दूरभाष : (07582) 297133

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

**सम्पादकीय परामर्श मण्डल**

- प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी
- प्रो. अशोक अहिरवार
- प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत
- प्रो. डी.के. नेमा
- प्रो. नागेश दुबे
- प्रो. अनुपमा कौशिक

# मध्य भारती

**मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका**

*अंक-84, जनवरी-जून 2023*
ISSN 0974-0066 (पूर्व-समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका)
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.no.-15

***प्रकाशित रचनाओं के अभिमत से डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर या सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है तथा यहाँ प्रकाशित आलेखों 'प्लेजिरिज्म' (Plagiarism) सम्बन्धी शुचिता की जिम्मेदारी लेखकों की है।***

**सम्पादकीय पत्र व्यवहार :**
मध्य भारती
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर - 470003 (म.प्र.)

*दूरभाष :* (07582) 297133
ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

*आवरण :* डॉ. छबिल कुमार मेहेर

**मुद्रण :**
अमन प्रकाशन
कीर्ति स्तंभ के पास, नमक मंडी, सागर (म.प्र.)

| सदस्यता शुल्क | | | |
|---|---|---|---|
| | प्रति अंक | आजीवन | |
| व्यक्तिगत | रु. 150/- | रु. 2000/- | |
| संस्थागत | रु. 200/- | रु. 4000/- | |

# अनुक्रम


प्रो. रामप्रसाद त्रिपाठी : एक इतिहासकार एवं कुशल प्रशासक 7
*बी.के. श्रीवास्तव*

जिला पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर, मध्यप्रदेश की उमा-महेश्वर प्रतिमाएं : शिल्पशास्त्रीय विधान 14
*सुरेन्द्र कुमार यादव*

'सर्जना पथ के सहयात्री' और निर्मल वर्मा 24
*अमरेन्द्र त्रिपाठी*

देशज ज्ञान की राजनीति एवं संभावनाएं 33
*चन्द्रशेखर पाण्डेय, वरूण कुमार उपाध्याय*

सामाजिक न्याय : भारतीय परिप्रेक्ष्य में एक वैचारिक अध्ययन 43
*नेहा निरंजन*

गाँधी और नवाचार : नई तालीम का पुनर्पाठ 50
*नवनीत शर्मा, नीरज कुमार मनी*

आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रिय भावना 59
*सञ्जय कुमार*

मध्यप्रदेश लोक सेवाओं के प्रदान की गारण्टी अधिनियम, 2010 के क्रियान्वयन में लोक-निजी भागीदारी (पी.पी.पी.मॉडल) की भूमिका 68
*शीतल द्विवेदी, टी. सरकार*

साहित्य एवं कला में वामन त्रिविकम 76
*शिवाकान्त त्रिपाठी*

शोध प्रविधि और साहित्यिक अनुसंधान : प्रामाणिकता का प्रश्न 81
*ज्योति गिरि*

# जिला पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर, मध्यप्रदेश की उमा-महेश्वर प्रतिमाएं : शिल्पशास्त्रीय विधान

*सुरेन्द्र कुमार यादव*

किसी भी क्षेत्र की धार्मिक समृद्धि उसके सांस्कृतिक विकास के ऐसे स्वर्णिम पृष्ठ होते हैं, जिसकी मूक प्रतिध्वनि उनके मूर्तिशिल्प से जीवन्त रहती है। विन्ध्याचल की उपत्यकाओं में बसी बुन्देलखण्ड की हृदयस्थली सागर अंचल का भू-भाग प्राचीन काल से ही समृद्ध एवं वैभवशाली सांस्कृतिक समुन्नत का केन्द्र रहा है। इस अंचल को मौर्य, शुंग, सातवाहन, शक, नाग, गुप्त, हूण, गुर्जर-प्रतिहार, कलचुरि, चन्देल एवं परमार राजवंशों ने सांस्कृतिक चेतना को बहुआयामी स्वरुप प्रदान किया। जिसके फलस्वरुप इस क्षेत्र में सभी सम्प्रदायों में धार्मिक समन्वय दिखलायी देता है। यहाँ वैष्णव, शैव, शाक्त, सौर एवं जैन सम्प्रदाय से संबंधित अनेक मन्दिरों एवं प्रतिमाओं का प्रमाण मिलता है। सागर जिले में अनेक महत्वपूर्ण पुरास्थल प्रकाश में आये, जिनमें एरण, बीनाबारहा, पहलेजपुर, मण्डीबोमारा आदि महत्वपूर्ण हैं। इस क्षेत्र के विभिन्न पुरास्थलों से प्राप्त स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प को जिला पुरातत्व संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र मध्य प्रदेश के सागर जिले के जिला पुरातत्त्व संग्रहालय की उमा महेश्वर प्रतिमाओं के अध्ययन पर आधारित है।

शिव से संबंधित प्रतिमाओं को उनके कलागत, रुपगत एवं भावगत दृष्टि से दो रुपों में विभक्त किया गया है, जो रौद्र एवं सौम्य रुप से संबंधित है। सौम्य रुप में शिव के शान्त, अनुग्रह तथा कल्याणकारक भाव प्रदर्शित है। इस अवस्था में शान्तभाव, इच्छित वस्तु का प्रदान, पार्वती के साथ संभाषण, योग तथा ज्ञान की शिक्षा आदि सद्भावना के साथ अंकन किया गया है। सौम्य प्रतिमाएं स्थानक तथा आसनस्थ दोनों प्रकार की मिलती हैं। सौम्य प्रतिमाओं में सोम-स्कन्द, आलिंगन चन्द्रशेखर, सदाशिव, नीलकंठ, महेश्वर, गंगाधर एवं उमा-महेश्वर प्रतिमाएं महत्वपूर्ण हैं। प्रतिमाशास्त्रीय ग्रन्थों में उमा महेश्वर प्रतिमाओं के लक्षणों का अंकन प्राप्त होता है। इन ग्रन्थों में उमा महेश्वर प्रतिमाओं को विविध नामों यथा आलिंगन चन्द्रशेखर, हर-गौरी, त्रिपुरसुन्दरी एवं शिव-पार्वती आदि नामों से उल्लखित किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में उमा-महेश्वर प्रतिमाओं का शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों के आधार पर अध्ययन किया गया है। इसमें उमा-महेश्वर प्रतिमाओं का प्रतिमाशास्त्रीय लक्षण, उनकी भाव-भंगिमा, शारीरिक व आलंकारिक सौन्दर्य तथा काल गणना पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही इन प्रतिमाओं का आध्यात्मिक व सांसारिक स्वरुप तथा निर्माण के उद्देश्य आदि पर भी गहनतापूर्वक विचार -विर्मश किया गया है।

**शिल्पग्रन्थों में उमा-महेश्वर का प्रतिमा विधान :** शिल्पग्रन्थों यथा विष्णुधर्मोत्तर पुराण, अपराजितपृच्छा, अंशुमद्भेदागम, रुपमण्डन, देवतामूर्तिप्रकरण, मयमतम एवं मत्स्यपुराण आदि में उमा-महेश्वर प्रतिमाओं के लक्षणों का विवरण प्राप्त होता है। इन ग्रन्थों में उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं का तालमान, उनके अंग-प्रत्यंगों के गढ़न में उनके विनियोग, रूप विधान एवं देहविन्यास के अलंकरण के लिये विविध प्रकार के आभूषणों का वर्णन किया गया

मध्य भारती-84, जनवरी-जून, 2023, ISSN 0974-0066, *pp. 14-23*
यूजीसी केयर लिस्ट, ग्रुप-सी (मल्टीडिसिप्लिनरी), क्र.सं.-15

है। इसके साथ ही इन ग्रन्थों में प्रतिमा विधान के अनुरुप ही उमा-महेश्वर के आयुधों, अलंकरणों (प्रसाधनिक वस्तुओं), वाहनों, गणों एवं पुत्रों आदि का भी उल्लेख मिलता है।

विष्णुधर्मोत्तरपुराण : विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार शिव-पार्वती को एक ही पीठिका पर आलिंगन करते हुये प्रदर्शित करना चाहिये। शिव के आठ सिर होते हैं, जो जटाजूट से शोभित रहते हैं। शिव द्विभुजी हैं, जिनके वाम हस्त देवी के स्कन्ध पर और दाहिने हस्त में उत्पल रहता है। उमा का दाहिना हस्त शिव के स्कन्ध पर और बायें में दर्पण धारण किये रहती हैं। देवी का कटि क्षीण तथा शरीर सुन्दर रहता है (विष्णुधर्मोत्तर पुराण 108, 8-10)। कभी -कभी महेश्वर के दाहिने हाथ में त्रिशूल के अंकन का भी विधान है। पीठिका के निचले हिस्से पर सिंह एवं नन्दी का अंकन क्रमशः उमा एवं महेश्वर के वाहन के रुप में दर्शित है।

युग्मं स्त्रीपुरुषं कार्यमुमेशौ दिव्यरूपिणौ। अष्टवक्त्रंतु देवेशं जटाचन्द्रार्धभूषितम्।।
द्विपाणिं द्विभुजां देवीं सुमध्यां सुपयोधराम्। वामपाणिं तु देवस्य देवस्कन्धे नियोजयेत्।।
दक्षिणं तु करं शम्भोरुत्पलेन विभूषितम्। देव्यास्तु दक्षिणं पाणिं स्कन्धे देवस्य कल्पयेत्।।

विष्णुधर्मोत्तरपुराण, 105, 8-10

रुपमण्डन : रुपमण्डन के अनुसार 'उमा-महेश' की प्रतिमा में महेश को जटामुकुट, विविध प्रकार के आभूषणों से सज्जित, त्रि-नेत्रयुक्त बनाना चाहिए। शिव के चतुर्भुजी हाथों में दाहिने हाथ में मातुलिंग और त्रिशूल व बायें हाथ से उमा का आलिंगन करते हुए, दूसरे हाथ में नागेन्द्र (सर्प) का अंकन हो। महेश के वामभाग में उमा हो, जिनका एक हाथ शिव के बायें कन्धें पर और दूसरे में दर्पण हो। उमा को विविध अलंकरणो यथा शिराभूषण, कुण्डल, हार और केयूर से सुसज्जित कर शिव के मुख का अवलोकन करते हुए बनाने का विधान बताया गया है। उमा- महेश्वर प्रतिमा के साथ ही वृषभ, स्कन्द, नन्दी तथा नृत्य करते हुये भृँगी ऋषि को भी प्रदर्शित करने का उल्लेख है(रुपमण्डन, 4-27, 28, 29)।

उमामहेश्वरं वक्ष्ये उमया सह शंकरः। मातुलिंगं त्रिशूलश्च धरते दक्षिणे करे।।
आलिंगिंतो वामहस्ते नागेन्द्रो द्वितीये करे। हरस्कन्द उमाहस्ते दर्पणो द्वितीये करे।।
अधस्तात् वृषभं कुर्यात् कुमारं च गणेश्वरम्। भगिंरिटिं तथा कुर्यान्निर्मासं नृत्यसंस्थितम्।।

रुपमण्डन 4-27, 28, 29

अंशुमद्भेदागम : अंशुमद्भेदागम के अनुसार शिव की जटा में चन्द्रमा की आकृति के कारण उन्हें चन्द्रशेखर नाम दिया गया। इस प्रतिमा में उमा सहित चन्द्रशेखर एवं आलिंगन चन्द्रशेखर का अंकन है(श्रीवास्तव, 1990 : 66)। अंशुमद्भेदागम में चन्द्रशेखर अपने बगल में बैठी उमा का आलिंगन करते हुए दिखाये जाते हैं। उमा दाहिने हाथ में कमल तथा बायें हाथ से महेश्वर के कटि का आलिंगन करती हैं(शुक्ल 1959:149)। उमा-महेश्वर प्रतिमा में उमा को सदैव बायीं ओर स्थान दिया गया है।

अपराजितपृच्छाः अपराजितपृच्छा में उमा-महेश्वर को समीपस्थ आसीन बैठे हुये दिखलाया गया है। महेश्वर के दाहिने हाथ में बीजपूरक एवं त्रिशूल है। बायाँ हाथ उमा की पीठ के पीछे से निकला हुआ है, और उनमें नाग धारण किये हुये हैं। उमा का दाहिना हाथ देव के स्कन्ध को स्पर्श कर रहा है, उसमें दर्पण धारण की हुयी हैं। देवमूर्ति के नीचे नन्दी का अंकन होना चाहिये। प्रतिमा के एक ओर कार्तिकेय तथा गणेश का अंकन तथा दूसरी ओर क्षीणकाय भृँगी नृत्य करते हुए दर्शाने का निर्देश है(अपराजितपृच्छा 213ः 25-27)।

उमामहेश्वरं वक्ष्ये उमया सह शंकरः। मातुलिंग त्रिशूललश्च धरते दक्षिणे करे।।

देवतामूर्तिप्रकरण : इस ग्रन्थ में उमा-महेश्वर मूर्ति का विवरण देते हुये सूत्रधार मण्डन ने कहा है कि महेश्वर को उमा के साथ द्विभुजी बनाना चाहिये। महेश्वर का एक हाथ भगवती उमा का आलिंगन करते हुए और अन्य हाथ में नागेन्द्र हो, उमा अपना दाहिना हाथ शिव के कन्धे पर तथा बायें हाथ में दर्पण लिये हो। इस प्रतिमा के नीचे वृषभ, कुमार स्कन्द, गणेश एवं नृत्यरत भृंगिरीट नामक शिवानुचर संस्थित हो(देवतामूर्तिप्रकरण 6, 31, 32)।

उमामहेश्वरं वक्ष्य उमया सह शंकरम्। मातुलिंग त्रिशूलश्च बिभ्रते दक्षिणे करे।। 31।।
अधस्तब्दषभं कुर्यात् कुमारश्च गणेश्वरम्। भृंगिरीटं तथा कुर्यान्नियमान्नृत्यसं स्थिता।। 32।।

देवतामूर्तिप्रकरण 6, 31, 32

अभिलषितार्थ चिन्तामणि : इस ग्रन्थ में उमा-महेश्वर की प्रतिमा का स्वरुप द्विभुजी या चतुर्भुजी और जटामण्डल से सुशोभित होना चाहिये। शिव को त्रिनेत्र और उनका एक हाथ पार्वती के कन्धे पर रखा हुआ और कुच तक पहुँचा हो। दूसरा सीधा हाथ त्रिशूल या उत्पल लिये होगा। शिव ललितासनमुद्रा में होंगे। उनके मस्तक पर चन्द्रमा स्थित होगा। वाम भाग में विराजित पार्वती देवी शिव के मुख पर दृष्टि लगाए होंगी। वह देवदेवेश्वर को स्पर्श किये दिखायी जाएगी। वह अपने दक्षिणी हाथ से कन्धे को व कुक्षी को स्पर्श करती होंगी। वाम भाग में उत्पल या दर्पण धारण करवाया जा सकता है। उनके दायें-बायें पार्श्व में जया-विजया और गणेश-कार्तिकेय होंगे( अभिलषितार्थ चिन्तामणि, 3/1, 779-784 )।

उमामहेश्वरस्यापि स्वरुपं वर्ण्यतेधुना। द्विभुजं वा चतुर्बाहुं जटामण्डलमण्डितम्।। 779।।
त्रिणेत्रं पार्वतीस्कन्धविन्यस्तैक्तकरं कुचे। करं द्वितीयं सव्ये तु शूलमुत्पलकं लिखेत।।
वामपङ्घासनं पादं दक्षिणं किश्चिदश्चितम्। एवमर्धेन्दुसंस्थाने निविष्टं शंकरं लिखेत।।
वामोरुवर्तिनीं देवीं हरवक्त्रावलोकिनीम्। स्पृशन्तीं देवदेवस्य वामांसं लीलया लिखेत।।
दक्षिणैः करजैस्स्कन्धे स्पृशन्तीं कुक्षिमेव वा। उत्पलं वामहस्तेन दर्पणं वापि बिभ्रतीम्।।
जयां च विजयां पार्श्वे गणेशं षण्मुखं लिखेत्। उमामहेश्वरस्यैवं स्वरुपं परिकीर्तितम्।।784।।

अभिलषितार्थ चिन्तामणि, 3/1, 779-784

मयमतम् : मयमतम में उमा-महेश्वर प्रतिमा के लक्षणों का विस्तार से वर्णन मिलता है। इसमें कार्तिकेय की स्थिति भी बताई गयी है, जिसके कारण इस प्रकार की प्रतिमा को सोमास्कन्द भी कहा गया है। अर्द्धचन्द्रासन पर आसीन यह प्रतिमा गौरी सहित होती है। उनके हाथ गौरी के साथ होते हैं और वामांग भुजाओं से संबद्ध होती है(मयमतम 36, 59-62) ।

अर्धचन्द्रासनं देवं वामागंस्थितगौरिकम्। उमासहितहस्तं तु देव्या हस्तोपगूहितम्।।
उमामहेश्वरं रुपं पूर्वोक्तस्वस्वरुपकम्। देवस्य वामपार्श्वे तु देवीं कुर्याद्विचक्षणः।।
उमाशंकरयोर्मध्ये स्कन्दं वै बालरुपिणम्। सुखासनं युक्ता कुर्यादुमास्कन्दान्वितं भवेत।।

मयमतम 36, 59-62

श्रीतत्वनिधिः श्रीतत्वनिधि के अनुसार उमा-महेश्वर का वर्णन करते हुये कहा गया है कि जिनके वाम में शैलसुता, सामने वृषभ, पीछे इन्द्राणि, दोनों पार्श्वों और वाटवादि कोणों में विविध दैत्यारि, भृंगी, नारद, बाण(बाणासुर), भैरव, गणेश तथा स्कन्द हो और जो मध्य में पुण्डरीक धारण किये हुये हों, ऐसे शम्भु का भजन करना चाहिये( तत्वनिधि 3/10)।

वामे शैलसुता पुरस्तु वृषभः पश्चात्सुरेन्द्रादयोः। दैत्यारिश्च विधिश्च पार्श्वदलयोर्वाटवादिकोणेषु च।।
भृंगी नारद बाण भैरव गजास्य स्कन्द वीरेश्वरा। मध्ये शुभ्र सरोज कोमलरुचं शम्भुं भजे पाण्डुरम्।।

श्रीतत्वनिधि, 3/10

मत्स्यपुराण : मत्स्यपुराण में उमा-महेश्वर को परम्परागत आभूषणों से सज्जित बतलाया गया है। इसमें शिव को द्विभुजी अथवा चतुर्भुजी बतलाया गया है, जिनके दाहिनें हाथ में त्रिशूल एवं कमल तथा बायें हाथ से देवी को आलिंगन एवं दर्पण के साथ प्रदर्शित करने का विधान है (मत्स्यपुराण, 260.11.20 )। इसके अतिरिक्त लिंगपुराण (1.92.7), शिवपुराण (5.21.9) एवं श्रीमद्भागवतपुराण ( 6.17.4/5) में उमा-महेश्वर प्रतिमा के निर्माण विधि एवं माहात्म्य चर्चा का उल्लेख किया गया है।

जिला पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर में उमा-महेश्वर की विविध प्रकार की प्रतिमाएं संग्रहीत हैं। ये प्रतिमाएं सागर क्षेत्र के विविध पुरास्थलों से प्राप्त की गयी हैं।

प्राप्ति स्थल : बीनाबारहा, सागर, म.प्र.
प्रतिमाः उमा-महेश्वर प्रतिमाः (छायाचित्र संख्या -1)
प्रकृतिः बलुआ प्रस्तर
कालः 12वीं शताब्दी ईसवी
आकार : 60x36x16 सेमी.
पंजीयन संख्याः 04

प्रस्तुत प्रतिमा पादपीठ के ऊपर बनायी गयी है। एक अधिष्ठान पर आसीन ललितासनमुद्रा में उमा-महेश्वर को दर्शाया गया है। इस प्रतिमा में महेश्वर को चतुर्भुजी एवं उमा को द्विभुजी अंकित किया गया है। महेश्वर का अग्र दाहिना हाथ खण्डित है तथा अन्य ऊपरी दाहिने हाथ में त्रिशूल धारण किये हुये हैं। उनका एक बायां हाथ उमा के वाम वक्ष को स्पर्श कर रहा है तथा अन्य बायें हाथ में सर्पफण धारण किये हुये हैं। उमा अपने दाहिने हाथ से महेश्वर का आलिंगन कर रही हैं। उनका बायां हाथ खण्डित है। उमा की मुखाकृति घिस गयी है। महेश्वर का जटामुकुट विविध आभूषणों से अलंकृत है। वे चक्र कुण्डल, मणिमुक्ताहार, कंकण, कटयवलय आदि आभूषण धारण किये हुये हैं। उमा की आकर्षण केशराशि को भी विभिन्न आभूषणों से सजाया गया है। उनके कानों में कुण्डल, गले में एकावली, द्विवली हार, भुजबन्ध एवं कटिसूत्र आदि का अंकन है। उमा-महेश्वर के पैरों के नीचे उनके वाहन व्याघ्र एवं नन्दी दृश्यमान है। इसमें उमा का बायां पैर व्याघ्र के मस्तक पर है। महेश्वर के पीछे अलंकृत गोलाकार प्रभामण्डल है। प्रतिमा वितान पर दोनों ओर उड़ते हुये गंधर्वों के मध्य पाँच शिवलिंगों का अंकन किया गया है। परिकर में मांगलिक व्यालों एवं शिवगणों का अंकन किया गया है। दाहिने परिकर के वाह्य शाखा में सबसे नीचे आसीनमुद्रा में गणेश का अंकन किया गया है। ठीक बायें परिकर के वाह्य शाखा में सबसे नीचे आसीनमुद्रा में कार्तिकेय का अंकन किया गया है। उमा-महेश्वर के पैरों के ठीक नीचे मध्य में अपने भुजबल से पादपीठ को उठाते हुये रावण का अंकन किया गया है। ग्यारहवीं शताब्दी ईस्वी से संबंधित इस प्रतिमा में महेश्वर को उनके परिवार के साथ प्रदर्शित किया गया है।

प्राप्ति स्थल : देवरी, सागर, म.प्र.
प्रतिमाः उमा-महेश्वर प्रतिमाः (छायाचित्र संख्या -2)
प्रकृतिः बलुआ प्रस्तर
कालः 11-12वीं शताब्दी ईसवी
आकार : 60x40x19 सेमी.
पंजीयन संख्याः 166

प्रस्तुत उमा महेश्वर की प्रतिमा ललितासनमुद्रा में आसीन है। इस प्रतिमा में महेश्वर के ऊपरी दाहिने पार्श्व का भाग खण्डित हो गया है। शिव का ऊपरी दाहिना हाथ खण्डित तथा निचले हाथ में मातुलिंग है, जबकी एक बायां हाथ उमा को आलिंगनबद्ध किये है तथा दूसरा खण्डित है। उमा द्विभुजी है, जिनका दाहिना हाथ शिव के स्कन्ध पर तथा बायें हाथ का अंकन अस्पष्ट है। उमा-महेश्वर एक दूसरे की ओर देखते हुये दर्शाये गये हैं। वे परम्परागत आभूषण धारण किये हुये हैं। प्रतिमा आसन के नीचे मध्य में महेश्वर के वाहन नन्दी को अपने इष्टदेव की ओर गर्दन उठाकर देखते (देववीक्षणतत्परः) हुये अंकित किया गया है। उसके बायीं ओर उमा का वाहन खण्डित है। इसके दोनों तरफ अनुचरों को दिखलाया गया है। प्रतिमा वितान पर दोनों ओर उड़ते हुये गंधर्वों का अंकन है।

प्राप्ति स्थल : गुढ़ा, सागर, म.प्र.
प्रतिमाः उमा-महेश्वर प्रतिमाः (छायाचित्र संख्या -3)
प्रकृतिः बलुआ प्रस्तर
कालः 11वीं शताब्दी ईसवी
आकार : 82x46x21 सेमी.
पंजीयन संख्याः 09

प्रस्तुत उमा महेश्वर की यह कलचुरि प्रतिमा एक पादपीठ पर बनायी गयी है। चतुर्भुजी महेश्वर ललितासनमुद्रा में आसीन है। यह प्रतिमा अत्यन्त घिस गयी है। उमा-महेश्वर- को परम्परागत आभूषणों से सज्जित किया गया है। महेश्वर के दाहिने ऊपरी हाथ में त्रिशूल एवं निचला हाथ वरदमुद्रा में है। बायें एक हाथ में सर्पफण तथा दूसरे से उमा का आलिंगन कर रहे हैं। द्विभुजी उमा का दाहिना हाथ महेश्वर के स्कन्ध पर तथा बायें हाथ में दर्पण धारण की हुयी हैं। महेश्वर का बायां पैर नन्दी के मस्तक पर है। नन्दी के दाहिनी तरफ भृंगी का अंकन है। प्रतिमा वितान पर उड़ते हुये मालाधारी गन्धर्वों एवं त्रिदेवों का अंकन किया गया है। सबसे निचले हिस्से में पादपीठ को अपने दोनों भुजाओं से उठाये हुये रावण का अंकन किया गया है। निचले हिस्से में दोनों पार्श्वों में शिव गणों का अंकन है।

प्राप्ति स्थल : मढ़पिपरिया, सागर, म.प्र.
प्रतिमाः उमा-महेश्वर प्रतिमाः (छायाचित्र संख्या -4)
प्रकृतिः लाल बलुआ प्रस्तर
कालः 12वीं शताब्दी ईसवी
आकार : 65x56x15 सेमी.
पंजीयन संख्याः 21

प्रस्तुत प्रतिमा में महेश्वर चतुर्भुजी एवं उमा द्विभुजी हैं। महेश्वर के दोनों दाहिने हाथ खण्डित हैं। उनका एक बायां हाथ उमा के वाम उरोज को स्पर्श कर रहा है तथा अन्य बायां हाथ खण्डित है। महेश्वर अलंकृत जटामुकुट, चक्रकुण्डल, एकावली, द्विवली हार, यज्ञोपवीत, वनमाला, कटिसूत्र, उरुद्दाम एवं भुजबन्ध आदि आभूषण धारण किये हुये हैं। महेश्वर सव्य ललितासन में बैठे हैं तथा उनका दाहिना पैर पद्म स्थंडिल पर रखा हुआ है। महेश्वर के बायीं जंघा पर द्विभुजी उमा भी ललितासन मुद्रा में बैठी हैं। द्विभुजी उमा का दाहिना हाथ महेश्वर के स्कन्ध पर तथा बायें हाथ में दर्पण है। उमा-महेश्वर दोनों अतीव सम्मोहक मुद्रा में एक दूसरे को देख रहे हैं। उमा की आकर्षक केशराशि को विविध आभूषणों से सज्जित किया गया है। उनके कानों में कुण्डल, गले में हार, स्तन हार, कटिवलय, उरुद्दाम, भुजबन्ध आदि आभूषण हैं। उमा के उत्तरीय को पारदर्शी एवं अलंकृत दिखलाया गया है। महेश्वर के सिर के पीछे नुकीले किरणों से युक्त प्रभामण्डल है। उमा-महेश्वर प्रतिमा के सबसे ऊपरी भाग में विद्याधर युगल, ब्रह्मा एवं लक्ष्मी के साथ चतुर्भुजी विष्णु का अंकन है। परिकर के दोनों तरफ मांगलिक गज एवं व्याल, स्थानक शिवगणों एवं उपासकों का अंकन है। दाहिनें परिकर के निचले भाग में गणेश तथा बायीं तरफ कार्तिकेय को अपने वाहन मयूर पर आसनस्थ दिखाया गया है। उमा-महेश्वर के आसन के नीचे नन्दी (मुख खण्डित) एवं व्याघ्र का अंकन है। सबसे निचले हिस्से के पादपीठ में रावण के दोनों ओर दो-दो उपासकों का अंकन है। त्रिमुखी रावण अपने दोनों हाथों से पादपीठ को पर्वत श्रृंखला के रुप में उठाने का प्रयास करते हुये दिखलाया गया है। इस प्रतिमा को शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों के अनुरुप ही निर्मित किया गया है।

प्राप्ति स्थल : खुरई, सागर, म.प्र.
प्रतिमाः उमा-महेश्वर प्रतिमाः (छायाचित्र संख्या -5)
प्रकृतिः बलुआ प्रस्तर
कालः 12-13वीं शताब्दी ईसवी
आकार : 115x41x25 सेमी.
पंजीयन संख्याः 137

प्रस्तुत प्रतिमा में उमामहेश्वर ललितासनमुद्रा में आसीन है। उमा उनकी बायीं जंघा पर विराजमान है। चतुर्भुजी महेश्वर के ऊपरी दाहिने हाथ में त्रिशूल तथा अधोहस्त में निलोत्पल धारण किये हैं। उनका एक बायां हाथ उमा को आलिंगनबद्ध है तथा दूसरे हाथ में सर्पफण धारण किये हुये हैं। उमा का दाहिना हाथ महेश्वर के स्कन्ध पर तथा बायां हाथ में दर्पण है। उमा एवं महेश्वर एक दूसरे ओर देख रहे हैं। महेश्वर के कानों में कुण्डल, गले में

कंठाहार, कमर में मेखला तथा हाथ में कंकड़ धारण किये हुये हैं। उमामहेश्वर प्रतिमा के दोनों पार्श्वों में ऊपर मालाधारी गंधर्व, कार्तिकेय एवं गणेश का अंकन है। नीचे के पार्श्वों में स्थानकमुद्रा में चवर धारण की हुयी उपासिकाएं एवं अंजलिमुद्रा धारण किये हुये अनुचरों का अंकन है। मध्य में नन्दी एवं नृत्य करते हुये भृंगीऋषि का अंकन है।

प्राप्ति स्थल : शेरपुर दरकौली(राहतगढ़), सागर, म.प्र.
प्रतिमाः उमा-महेश्वर प्रतिमाः (छायाचित्र संख्या -6)
प्रकृतिः बलुआ प्रस्तर
कालः 11वीं शताब्दी ईसवी
आकार : 68x46x24 सेमी.
पंजीयन संख्याः 69

प्रस्तुत प्रतिमा त्रिरथ पादपीठ के ऊपर बनायी गयी है। प्रतिमा का ऊपरी आवरण अत्यन्त घिस गया है। एक अधिष्ठान पर आसीन ललितानमुद्रा में उमा-महेश्वर को दर्शाया गया है। इस प्रतिमा में महेश्वर के मस्तक का ऊपरी भाग एवं भुजाएं खण्डित है। उमा की भुजाएं भी खण्डित है। महेश्वर के ऊपरी दाहिनें हाथ का त्रिशूल दिखलायी दे रहा हैं। उनका एक बायां हाथ उमा के वाम वक्ष को स्पर्श कर रहा है। महेश्वर के पैरों के नीचे उनके वाहन नन्दी तथा मध्य में भृंगी दृश्यमान हैं। महेश्वर के पीछे नुकीले किरणों युक्त गोलाकार प्रभामण्डल से सज्जित किया गया है। उमा-महेश्वर को परंपरागत आभूषणों से अलंकृत किया गया है। प्रतिमा वितान पर दोनों ओर उडते हुये गंधर्वों का अंकन किया गया है। परिकर में मांगलिक व्यालों एवं शिवगणों का अंकन किया गया है। दाहिने परिकर के आन्तरिक शाखा में सबसे नीचे नृत्यमुद्रा में गणेश तथा ठीक बायें परिकर के आन्तरिक शाखा में सबसे नीचे स्थानकमुद्रा में कार्तिकेय का अंकन किया गया है। उमा-महेश्वर के पैरों के ठीक नीचे मध्यरथिका में अपने भुजबल से पादपीठ को उठाते हुये रावण का अंकन किया गया है। ग्यारहवीं शताब्दी ईस्वी से संबंधित इस प्रतिमा में महेश्वर को उनके परिवार के साथ दर्शित किया गया है

प्राप्ति स्थल : देवरी, सागर, म.प्र.
प्रतिमाः उमा-महेश्वर प्रतिमाः (छायाचित्र संख्या -7)
प्रकृतिः बलुआ प्रस्तर
कालः 12वीं शताब्दी ईसवी
आकार : 139x81x36 सेमी.
पंजीयन संख्याः 194

इस उमा-महेश्वर प्रतिमा में प्रतिमाशास्त्रीय सौन्दर्य का अद्‌भुत दिग्दर्शन दिखलायी देता है। इसमें शिव सव्य ललितासनमुद्रा में आसीन हैं तथा उनका बायां पैर पद्म स्थंडिल पर स्थिर है। उनकी बायें जंघे पर उमा बैठी हुयी हैं। चतुर्भुजी शिव का एक दाहिना हस्त अभयमुद्रा में तथा दूसरा खण्डित है। महेश्वर वामहस्त से उमा के वाम उरोज को स्पर्श करते हुये दिख रहे है। दूसरा वामहस्त में त्रिशूल का अंकन है। द्विभुजी उमा का दाहिना हस्त शिव के स्कन्ध पर तथा बायां हस्त खण्डित है। उमा-महेश्वर विविध आभूषणों से सुशोभित हैं। उनके कानों में चक्रकुण्डल, गले में हार, यज्ञोपवीत, भुजबन्ध, कंकण, केयूर, वनमाला, कटिसूत्र, उरुद्दाम, पादवलय के अलावा अलंकृत जटामुकुट धारण किये हुये है। प्रतिमा वितान में प्रभामण्डल के दोनों ओर मालाधारी गन्धर्व युगल हैं, जिनके मध्य में शिव का अंकन किया गया है। उसके ठीक नीचे दाहिने पार्श्व में चुतुर्भुजी विष्णु एवं बायें पार्श्व में ललितासनमुद्रा में त्रिमुखी ब्रह्मा का अंकन है। दाहिने पार्श्व के सबसे निचले हिस्से में शूलधारी कार्तिकेय एवं उसके ठीक नीचे गणेश का अंकन है। बायें पार्श्व में शिवगण का अंकन है। शिव के पैरो के समीप शिव का वाहन नन्दी, मध्य में नृत्य करता भृंगी तथा बायीं तरफ उमा का वाहन व्याघ्र है। निचले हिस्से में अपनी भुजाओं से पादपीठ को उठाते हुये रावण का

अंकन किया गया है। उसके दोनों ओर दो-दो शिव गणों का अंकन किया गया है। यह उमा-महेश्वर प्रतिमा सम्पूर्ण अलौकिक सौन्दर्य एवं आनन्दानुभूति को अभिव्यक्त करती है।

निष्कर्ष : उपरोक्त विवरणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पूर्व मध्यकालीन मध्य भारत में उमा- महेश्वर की प्रतिमाओं का विशेष प्रचलन था। यद्यपि इस प्रकार की प्रतिमाएं पहली शताब्दी ईस्वी सन् से ही मिलनी प्रारम्भ हो जाती है (बनर्जी 1956: 39/2)। गुप्तकाल में उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं का विशेष महत्व रहा। पूर्व मध्यकाल में यह क्षेत्र शैव-शाक्त धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा। इसके फलस्वरुप इस काल में उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं का निर्माण सबसे ज्यादा हुआ। जिला पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर की सभी उमा-महेश्वर प्रतिमाएं आसनस्थमुद्रा में ही प्रदर्शित है। इन प्रतिमाओं का निर्माण प्रतिमाशास्त्रीय ग्रन्थों के अनुरुप हुआ है।

इन प्रतिमाओं में अधिकांशतः उमा-महेश्वर युगल को अतीव सम्मोहक मुद्रा में एक दूसरे की ओर निहारते(देखते हुये) हुये प्रदर्शित किया गया है। महेश्वर के मुख पर अनुराग और उमा की मुंदी हुई आंखों पर नारी सुलभ लज्जा का भाव सहज ही दृष्टिगोचर होता है। ये प्रतिमाएं अपनी भावाभिव्यंजना के माध्यम मुख, हस्त एवं पादमुद्रा और शरीर सौष्ठव के विभिन्न अवयवों की भंगिमाओं से आध्यात्मिकता के साथ-साथ लौकिकता के अर्थपूर्ण भावों को प्रकट करती हैं। कहीं-कहीं उमा-महेश्वर प्रतिमाओं में देवत्व की विराटता एवं भव्यता को दिखलाने का प्रयास किया गया है। संभवतः इसके लिये प्रतिमा के सबसे ऊपरी हिस्से में ब्रह्मा, विष्णु, विभिन्न देवगणों एवं मालाधारी गंधर्वों आदि का अंकन किया गया है। साथ ही अलंकृत प्रभामण्डल, मांगलिक गजों व व्यालों, स्थानक शिवगणों, उपासको, उनके पुत्रों एवं कहीं-कहीं रावणानुग्रह दृश्य का अंकन किया गया है। बीनाबारहा (चित्र संख्या 1) से प्राप्त उमा-महेश्वर प्रतिमा के वितान पर पाँच शिवलिंगों का पंक्तिबद्ध अंकन किया गया है। यह पांच शिवलिंग शिव के पाँच रूपों (सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरूष व ईशान) के परिचारक हैं, जोकि पाँच तत्वों (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर) के प्रवर्तक माने जाते हैं।

प्रतिमाशास्त्रीय दृष्टि से उमा-महेश्वर के अंकन में स्वाभाविकता तथा यथार्थता दिखाई देता हैं। उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं में शारीरिक संरचना के प्रत्येक अंगों को इस प्रकार निरुपित किया गया है कि उनके पूर्ण स्वरुप में लय उत्पन्न हो गया है। उमा-महेश्वर प्रतिमाएं अपने शारीरिक एवं आलंकारिक सौन्दर्य के लिये विशेष महत्वपूर्ण हैं। इन प्रतिमाओं में शारीरिक सौन्दर्य के अन्तर्गत उनकी अंगभंगिमा का विशेष महत्व है। उमा-महेश्वर प्रतिमाओं में भावाभिव्यंजना के माध्यम को मुख (नेत्र, नासिका एवं होंठ), हस्त, शारीरिक सौष्ठव एवं मुद्राओं(हस्त व पाद) के विभिन्न अवयवों के रूप में दर्शाया गया है। इन प्रतिमाओं के निर्माण में शास्त्रीय नियमों का अनुपालन करते हुए उनके संतुलित देहयष्टि पर विशेष ध्यान दिया गया है। शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों में वर्णित उमा-महेश्वर के शारीरिक सौन्दर्य को निखारने में शिल्पी ने अद्‌भुत निपुणता प्राप्त की है। महेश्वर के शारीरिक सौन्दर्य में अंग सौष्ठव की बलिष्ठता, मुखाकृति पर धनुषाकार उर्णा, अण्डाकार चेहरा तथा चिबुक में उभार के साथ ही मुखाकृति पर स्मित हास्य भाव दृष्टिगोचर होता है। उमा-महेश्वर के सम्पूर्ण शारीरिक सौन्दर्य का अंकन अलौकिक आनन्दानुभूति की अभिव्यक्ति प्रतीत होता है। उमा के शारीरिक सौन्दर्य में अभिमुख शिर, मुखारविंद, प्रेमालाप से प्रसन्न नयन, उन्नत उरोज, आवर्त नाभि, स्मितयुक्त वदन एवं हास्य उत्सुक ओष्ठ को कलाकृति के रूप में उत्कृष्ट ढ़ग से प्रदर्शित किया गया है। उमा के.शिल्पांकन में स्त्रियोचित मांसल सौन्दर्य के साथ नारी सुलभ कमनीयता का भाव है। महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भव में पार्वती के सौन्दर्य का वर्णन करते हुये कहा है कि जब ब्रह्मा ने सारे विश्व के सौन्दर्य उपमानों को एकत्रित कर यथास्थान संजोया तब पार्वती की प्रतिमा निर्मित हुयी है (काले 1967: 1-49)। देवरी से प्राप्त (चित्र संख्या- 7) उमा-महेश्वर की कलचुरि कालीन प्रतिमा उपरोक्त वर्णित प्रतिमाशास्त्रीय शिल्प की संपूर्ण विशेषता को अपने अन्दर समाहित की हुयी है।

इन प्रतिमाओं में महेश्वर के अद्‌भुत परिवार का निदर्शन होता है, जिनमें कल्याण शक्ति उमा, देव सेनापति कार्तिकेय एवं प्रथम पूज्यदेव व विध्नविनाशक गणपति हैं। उमा-महेश्वर का प्रणयक्रीड़ा, प्रणयमुद्रा, आलिंगनमुद्रा एवं अपने पुत्र कार्तिकेय एवं गणेश के साथ अंकन एक आदर्श गृहस्थ जीवन का श्रेष्ठ उदाहरण है। पुराणों के अनुसार महेश्वर एकान्त में उमा को अनेक आध्यात्मिक रहस्यों को सुनाते हैं। सम्पूर्ण सृष्टि एवं क्रियाओं

के रहस्य उमा-महेश्वर (शिव पार्वती) के संवाद में मिलता है। ऐसी मान्यता है कि अकेले शिव 'योग अर्थात् संयास के' तथा शिव परिवार 'सांसारिक सुखों के प्रतीक' हैं। उमा- महेश्वर साक्षात् प्रकृति-पुरुष के प्रतीक हैं। वाणी और अर्थ का समन्वय, जगत के मातृ-पितृ स्वरूप पार्वती और शिव के प्रति प्रणति रूप मंगलाचरण जीवन के विराट स्वरूप की अभिव्यक्ति करता है ( रघुवंश, 1/1)।

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये। जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।।

उमा-महेश्वर प्रतिमाओं में अधिकांशतः उमा को ललितासन मुद्रा में बैठे हुये महेश्वर के बायें जंघें पर दिखलाया गया है। वास्तव में यह एक ऐसी लालित्य एवं सौन्दर्यपूर्ण अवस्था है, जिसमें स्वतः ही श्रृंगार का भाव उत्पन्न हो जाता है। इन प्रतिमाओं में ध्यान देने योग्य बात यह है कि महेश्वर के गले में अंकित सर्प का अंकन गले से दूर बाहर की ओर दिखलाया गया है। संभवतः गृहस्थ जीवन में विषधर सर्प का कोई औचित्य नहीं है। संभवतः इसीलिये कहीं-कहीं सर्प के स्थान पर पुष्पगुच्छ, दर्पण एवं अंजनपात्र लिये हुये महेश्वर को अंकित किया गया है। ऐसा अद्भुत परिवार भारतीय संस्कृति का एक विशिष्ट पक्ष प्रस्तुत करने में समर्थ हैं। ये सभी उमा-महेश्वर प्रतिमाएं पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं। इस प्रकार ये कहा जा सकता है कि जिला पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर में प्रदर्शित ये प्रतिमाएं शिल्पग्रन्थों में वर्णित उमा-महेश्वर प्रतिमा लक्षणों का पूर्णरूप से अनुपालन करते हुये निर्मित है।

ये प्रतिमाएँ शाश्वत सौन्दर्य की कमनीय कान्ति उमा और प्रेम का चिरन्तर पुजारी आदिपुरुष शिव के श्रृंगारिक प्रेम का प्रांजल प्रतीक हैं। वास्तव में उमा-महेश्वर प्रतिमाओं में धर्म, कला, दर्शन एवं अध्यात्म के साथ-साथ सांसारिक सौन्दर्य बोध की भी समग्रतापूर्वक समागम दिखलायी देता है।

---

*प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व*
*डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर, (म.प्र.) 470003*

**संदर्भ :**

*आप्टे, एच.एन (संपादक), 1907, मत्स्य पुराण, पूनाः आनन्दाश्रम संस्कृत सीरीज*
*पोपटभाई अंबाशंकर मांकड (संपादक), 1940, अपराजितपृच्छा (भुवनदेव कृत), बडौदाः*
*गायकवाड़ ओरियण्टल, सीरीज*
*श्रीवास्तव, बृजभूषण, 1990 (द्वितीय संस्करण), प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन*
*श्रीवास्तव, बलराम (संपादक), 1968, रुपमण्डन(श्रीसूत्रधारमण्डन कृत), जोधपुरः राजस्थानी ग्रन्थागार*
*श्रीमद्भागवत महापुराण, 1971, गोरखपुरः गीताप्रेस*
*श्रीकृष्णदास, क्षेमराज(संपादक), 1884, श्रीतत्वनिधि(कृष्णराज वोडेयार- तृतीय प्रणीत), मुम्बईः श्रीवेंकटेश्वर स्टीम मुद्रालयाध्यक्ष*
*सांख्यतीर्थ, उपेन्द्र मोहन (संपादक),1936 देवतामूर्तिप्रकरण(श्रीसूत्रधारमण्डनविरचित), कलकत्ता*
*बनर्जी, जे.एन, 1956, द डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दू आइकनोग्राफी, नई दिल्लीः मुंशीराममनोहर लाल पब्लिशर्स।*
*मिश्र, ज्वाला प्रसाद, 1964, रघुवंश महाकाव्य (महाकवि कालिदास प्रणीत), बम्बई : श्रीवेंकटेश्वर स्टीम मुद्रालयाध्यक्ष*
*शुक्ल, द्विजेन्द्रनाथ, 1959, वास्तु-शास्त्रम् प्रतिमालक्षणम्, दिल्लीः राजकमल प्रकाशन*
*शिव पुराण, हनुमान प्रसाद(संपादक), 1978, गोरखपुरः गीताप्रेस*
*शाह, प्रियबाला (संपादक), 1912, विष्णुधर्मोत्तरपुराण, मुम्बईः वैंकटेश्वर प्रेस*
*शास्त्री, शामदेव (संपादक), 1939, अभिलषितार्थ चिन्तामणि(सोमश्वरदेव कृत), प्रथम भाग, मैसूर : ओरियण्टल, लाइब्रेरी पब्लिकेशन, सीरिज 69*
*शास्त्री, तरुवागम गणपति (सम्पादक), 1919, मयमत (मयमुनिकृत), त्रिवेन्द्रमः राजकीय मुद्रण यन्त्रलय*
*लिंग पुराण, 1981, मुंबई : लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस*
*काले, एम.आर. (सम्पादक) कालिदास कृत कुमार सम्भव, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 1967,*

चित्र संख्या 1 : उमामहेश्वर
बीनाबारहा सागर, मध्य प्रदेश 12वीं शताब्दी ईसवी

चित्र संख्या 2 : उमामहेश्वर
देवरी, सागर, मध्य प्रदेश, 11-12 वी शताब्दी ईसवी

चित्र संख्या 3 : उमामहेश्वर
गुढ़ा, सागर, मध्य प्रदेश 11वीं शताब्दी ईसवी

चित्र संख्या 4 : उमामहेश्वर
मढ़पिपरिया, सागर, मध्य प्रदेश, 11वी शताब्दी ईसवी

चित्र संख्या 5 : उमामहेश्वर
खुरई, सागर, मध्य प्रदेश, 11वीं शताब्दी ईसवी.

चित्र संख्या 6 : उमामहेश्वर
शेरपुर दरकौली, सागर, मध्य प्रदेश, 11वी शताब्दी ईसवी

चित्र संख्या 7 : उमामहेश्वर
देवरी, सागर, मध्य प्रदेश, 12वीं शताब्दी ईसवी

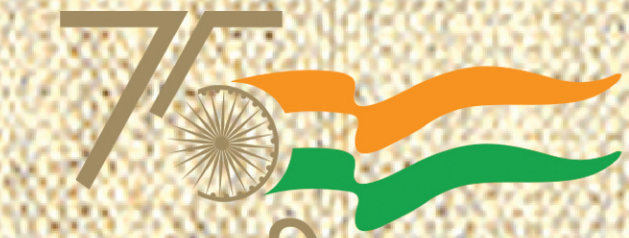

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

ISSN 0974-0066

**डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय**
( केन्द्रीय विश्वविद्यालय )
सागर ( मध्यप्रदेश ) - 470 003
दूरभाष : 91-7582-264455
ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com